स्वतंत्रता के सही मायने

व्यक्ति हर पल उन बंधनों के साथ हमेशा जीता है जिन बंधनों का उसके जीवन में कोई उपयोग नहीं है। फिर भी वो उनके साथ रहकर पूरे जीवन को गुज़ारता है और उससे छूटना भी चाहता है। छूटने का भावार्थ यहाँ ये है कि हर पल व्यक्ति ये महसूस करता है कि शायद इसकी वजह से मैं दुःखी हूँ बहुत ज़्यादा। और आपने कभी देखा होगा कि जितने भी बड़े-बड़े स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हुए उनकी जब आप कहानियां पढ़ते हैं, उनकी शहादत की बात पढ़ते हैं तो उनकी एक बात हमेशा ज़हन में आती है कि उन्होंने बिना परवाह किए सिर्फ एक लक्ष्य रखा कि हमें इस दुनिया में सभी को फ्रीडम देनी है ताकि सभी अपने हिसाब से जी सकें, खा सकें, पी सकें, रह सकें। वैसे हम सब भी स्वतंत्र हो गए देश के नाते कि हमारे देश पर किसी का बहुत बड़ा कब्जा था वो हट गया। लेकिन उसके बाद भी हम सभी अपने आप में खुश नज़र नहीं आते। उसका मात्र एक कारण है कि स्वतंत्रता एक बाहरी आवरण को हटा देने से नहीं आ जाती। लेकिन अन्दर से, देह से, देह के संबंधों से, देह के पदार्थों से, देह की बहुत सारी बातों से हम परतंत्र हैं। और हरपल उन बातों में जीवन हमारा जा रहा है। उसको चलाने के लिए दिन-रात आप मेहनत भी कर रहे हैं और

सबके साथ जुड़ भी रहे हैं। जुड़ने के बावजूद भी हम सबके अन्दर उसका वो बल और उसका फल क्यों नहीं प्राप्त हो रहा है? कारण मात्र एक है कि स्वतंत्रता एक मन की दशा है, एक मन की स्थिति है, एक मनोदशा है।

हम किसी चीज़ में खुद को बांधें तो परतंत्र हैं, और उससे निकल जायें तो स्वतंत्र हैं। ऐसे आपने कई बार देखा होगा कि जब किसी का शरीर छूट जाता है तो व्यक्ति का शरीर वहीं रह जाता है और जितने लोग वहाँ आस-पास बैठे होते हैं सब इस बात को आसानी से स्वीकार कर लेते हैं कि अब व्यक्ति ने शरीर छोड़ दिया है, आराम से शरीर छोड़ के चला गया है। उसको इस बात से कोई डिस्टर्बेंस, कोई परेशानी, कोई दर्द, कोई तकलीफ नहीं होती, वो आराम से निकल जाता है। जीवन के इन पहलुओं में भी ऐसा ही है।

हम सभी हर एक कर्म को करके जितनी बार अपने आप को डिटैच करते हैं उतना हम उस चीज़ से स्वतंत्र फील करते हैं। हमें सिर्फ एक धारणा की ज़रूरत है और वो है इसका संज्ञान होना, इसका ज्ञान होना, इसकी समझ होना कि सारी स्थूल चीज़ों ने हमें नहीं बांधा है, हम इनके साथ बंधे हुए हैं। और जब इनके साथ बंधे हुए हैं तो उसी के आधार से हम कर्म भी करते हैं। अगर वो कर्म हमारे हिसाब से हो तो सुख मिलता है। लेकिन अगर किसी और के हिसाब से हो तो दुःख मिलता है। लेकिन हमारे हिसाब से जो कर्म किया गया है वो ज़रूरी नहीं है वो बहुत अच्छा ही हो। क्योंकि हो सकता है कि आपको उसमें मज़ा आ रहा हो, लेकिन सबको अच्छा नहीं लगता। तो ऐसे ही हमें उन कर्मों को भी करना है जिन कर्मों से सबको सुख मिले और हमें भी सुख मिले। दूसरा हमें हमेशा इस बात का ध्यान रखना है कि मैं भी अच्छा फील करूँ और हर पल अच्छा फील करूं। लेकिन ये सारी बातें एक दिन की नहीं हैं। स्वतंत्रता हर पल खुद को खुद सारी चीज़ों से डिटैच करके,अलग करके याद दिलाने की शक्ति का नाम भी है। हम जितना स्वतंत्र हैं उतना शांत भी हैं। जितना स्वतंत्र हैं उतना शक्तिशाली भी, जितना स्वतंत्र हैं उतना मोहजीत हैं, जितना स्वतंत्र हैं उतना निर्मोही हैं, जितना स्वतंत्र हैं उतना पवित्र हैं। ये सारी बातों को हम क्रोस चेक कर सकते हैं। बार-बार देख सकते हैं कि मैं कहाँ-कहाँ अपने आपको परतंत्र महसूस करता हूँ। तो अन्दर की स्वतंत्रता एक बार हमने महसूस कर ली तो मैं बाहर रहते हुए, सबके साथ जीते हुए इन सारी बातों से डिटैच होकर अपना उस जीवन को फिर से पुनः अपना सकता हूँ जो बाहरी स्वतंत्रता के साथ-साथ अन्दर की स्वतंत्रता को भी फील कराये।

तो इस स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर क्यों न हम इस विधि को अपनायें कि अन्दर से संज्ञान को लें कि आत्मा इस शरीर से पहले से ही स्वतंत्र थी, अभी भी है लेकिन बस ज्ञान देकर, समझाकर उसको बार-बार याद दिलाकर इस बात को पक्का करना है कि आप स्वतंत्र आत्मा हो।

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

प्रश्न : मेरा नाम पायल चौहान है। पहले तो मुझे ये बतायें कि क्या भूत, प्रेत, पिशाच, जिन्न आदि सचमुच में होते हैं या केवल कोरी कल्पना है? क्या आपने इन्हें देखा है?

उत्तर : मैं कभी-कभी ये सोचा करता हूँ कि ये नाम उनको दिए किसने? उनका कोई ऑर्गनाइज़ेशन थोड़ा है। मनुष्य ने जैसा देखा वैसा नाम दे दिया। वास्तव में ऐसा कुछ नहीं है। देखिए जब आत्मा शरीर छोड़ती है तो शरीर छोड़ने के साथ वो सूक्ष्म शरीर के साथ देह से बाहर निकलती है। इसमें अगर किसी ने पाप कर्म बहुत किए हैं तो उससे पाप के काले वायब्रेशन्स चारों ओर फैलते हैं अर्थात् काला उनका सूक्ष्म शरीर बन जाता है। जब वो शरीर छोड़ेंगे तो वो काले-काले दिखेंगे जिसको दिखेंगे, सबको नहीं दिखेंगे। तो लोग कहेंगे भूत बन गया। या ये शब्द आम लोगों के मुख पर भी आ गया है। किसी न किसी को देख लिया तो भूत है। भले वो फरिश्ता ही क्यों न हो। लेकिन उसको भी कहेंगे ये तो भूत है। तो वास्तव में ऐसा होता है कि यदि किसी की एक्सीडेंट में डैथ हो गई, अचानक मृत्यु, दुर्घटना या किसी के पाप बहुत ज़्यादा हो गए हैं उसे मनुष्य योनि मिल नहीं सकती। ऐसा हमने पहले भी बताया है कि इसका मतलब ये नहीं कि पशु-पक्षी बनेंगे, नहीं। मनुष्य, मनुष्य ही बनेगा। उसके पापकर्मों की सीमा उससे आगे निकल गई जहाँ उसे मनुष्य योनि मिलती। वो उस समय तक भटकते रहेंगे जब तक उन्हें पापों की सज़ा मिले और उसके कर्मों का खाता उस लेवल पर आये कि वो मनुष्य योनि में प्रवेश कर सके। तीसरी एक बात और ये है जिन लोगों का कनेक्शन भूत-प्रेतों से यहाँ है, जो तंत्र-मंत्र विद्या करते हैं, जो भूतों को सिद्ध करते हैं उन्हें वश कर लेते हैं निश्चित रूप से वो देह छोड़ने के बाद उसी योनि में चले जाते हैं। क्योंकि उनसे उनका कर्मों का खाता बनता रहता है, कार्मिक अकाउंट तैयार होता रहता है। तो भूत-प्रेत उन्हें हम ये भी कह सकते हैं कि अट्रेक्ट कर लेते हैं अपनी ओर और उन्हें भी पुनर्जन्म नहीं मिलता है। इसलिए वो होते तो हैं लेकिन ये इतने ज़्यादा नहीं कि उनसे कोई डरने की बात हो या हम भी कोई ऐसे ही बनेंगे इस संकल्प से बिल्कुल निश्चिन्त रहना चाहिए। जिनके अच्छे कर्म हैं वो मनुष्य योनि में बहुत अच्छा जन्म लेते हैं। ये सब योनियां हैं तो सही लेकिन कोई बहुत थोड़ी लेकिन कुछ समय के बाद उनका जन्म भी हो जाता है। ये सब कर्मों पर ही निर्भर करता है। और जैसे आपने पूछा कि क्या मैंने इन्हें देखा है तो मैं बताना चाहूंगा कि हाँ मैंने एक ही बार देखा था और मुझे ये अनुभव हुआ था कि मैंने उसे जो कुछ भी कहा उससे वो मुक्त हो गई आत्मा। यही लगभग 30 साल पहले एक बहुत छोटा-सा अनुभव रहा। नक्की किनारे घूम रहा था तो एक लेडी रूप में फटाफट ऊपर चढ़कर आई तो पूछा कि मुझे रघुनाथ मंदिर जाना है, मैंने कहा इधर से चले जाओ और वो गुम। और वो चढ़ाई ऐसे थी 15 फुट और कोई व्यक्ति चढ़ जाये सम्भव नहीं था। तब मुझे ऐसा आभास नहीं हुआ था लेकिन बाद में मुझे किसी ने बताया कि यहाँ ऐसा प्रभाव है लेकिन उसके बाद मैंने ये भी सुना कि उसके बाद वो प्रभाव समाप्त हो गया। जैसे मनुष्य के अन्दर आत्मायें हैं ऐसे वो भी आत्मायें हैं तो उनसे डरने की ज़रूरत नहीं है। क्योंकि वो आत्मायें शांति लेने आती हैं और भटकते-भटकते खुद भी बहुत दुःखी हो जाती हैं और जब हम अपने चारों ओर एक पॉवरफुल औरा क्रियेट कर लेते हैं प्रभामंडल, तो ये आत्मायें हमसे बहुत भयभीत होती हैं। और हमें ये भी जानना चाहिए कि इन आत्माओं की मुक्ति का आधार भी हम ही हैं। हम इन्हें कुछ अच्छी चीज़ें सिखाएंगे। तो वो मुक्त हो जाते हैं।

प्रश्न : भूतों से हमें डर क्यों लगता है क्या उनसे हमें डरने की आवश्कता है?

उत्तर : भूतों का भय इतना ज़्यादा फैला दिया है समाज में लोगों ने, मनुष्य न चाहते भी कुछ भी देखें, उन्हें रात को पेड़ की छाया भी दिखे तो उसको भी भूत ही समझ लेते हैं। उसे स्वप्न भी आ रहा हो तो वो ऐसा सोच लेता है। उनसे डरने की आवश्यकता नहीं है वो भी आत्मायें हैं, मनुष्य आत्मायें हैं। भयानक रूप तो उनके विचारों के, उनके कर्मों के कारण दिखाई देता है। अगर किसी को इनसे डर भी लगता हो तो वो ये अभ्यास करें कि मैं सर्वशक्तिवान की संतान मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। सोने से पहले 21 बार कर लें, उठते ही 21 बार कर लें। और कभी डर लगने लगे तब कर लें। बस ये ठीक हो जायेगा। और अगर घर में भी किसी के ऊपर ऐसा प्रभाव है तो वो भी मास्टर सर्वशक्तिवान का अभ्यास करें और उनमें से कोई एक ने भी राजयोग सीखा है तो वो घर में बैठकर 2-3 बार 15-15 मिनट अच्छा योगाभ्यास करें ये सब समाप्त हो जायेगा।

प्रश्न : कई लोग भूत को भगाने के लिए हनुमान चालिसा पढ़ते हैं, क्या सचमुच इससे भूत भाग जाते हैं या भय को भगाने के लिए हनुमान चालिसा पढ़ते हैं?

उत्तर : ये एक मान्यता चली आ रही है, हनुमान को महावीर के रूप में दिखाया, बहुत शक्तिशाली और ये मान्यता समाज में प्रचलित हो गई कि हनुमान की तुम मान्यता रखोगे, उसकी तुम पूजा करोगे या उसकी हनुमान चालिसा का पाठ पढ़ोगे तो इससे मुक्त हो जाओगे तो उस भावना का भी असर और उसके कारण से मनुष्य का मनोबल भी बढ़ जाता है। तो दोनों के कारण उन चीज़ों से मुक्त हो जाते हैं। भय भी उससे नष्ट हो जाता है और जब मनुष्य निर्भय हो जाता है तो भी ये भूत भाग जाते हैं। क्योंकि मनुष्य का भय जैसे इनको अट्रेक्ट करता है और जो बहुत निर्भय है और सोचता है कि मैं इनसे पॉवरफुल हूँ इन सबका मेरे ऊपर कोई असर नहीं हो सकता तो सचमुच उससे ये भूत ही भयभीत होते हैं। अगर आपको शमशान के पास या कब्रिस्तान के पास से भी गुज़रना पड़ रहा है तो मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ ये अभ्यास करते-करते गुज़रेंगे तो कुछ भी नहीं होगा। तो इस भय से हमें मुक्त हो जाना चाहिए। ये आत्मायें बहुत कमज़ोर होती हैं, पॉवरफुल नहीं होती। पॉवरफुल तो हम हैं। हमारे पिता जी बचपन से ही हमें मजबूत करते थे कि जो जिन्दा कुछ नहीं कर सके वो मर के क्या करेगा। निर्भय रहो बिल्कुल।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल